Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities, Vol 1 pp. 33-37, 2006
DOI: 10.51220/hjssh.v1i1.6

शिवानी के उपन्यासों में समाज दर्शन

गुड्डी बिष्ट
हिन्दी विभाग, हे.न.ब. गढ़वाल वि.वि., परिसर, पौड़ी, श्रीनगर गढ़वाल

हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकारों में शिवानी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे जहाँ अपनी संस्कृनिष्ठ भाषा और पर्वतीय जीवन की प्रामाणिक अभिव्यक्ति के लिए पहचानी जाती है। वहीं उनका कथा साहित्य भारतीय नारी के जीवन का समग्र प्रस्तुत करता है। व्यष्टि और समष्टि के द्वन्द्वों से कथावस्तु का ताना-बाना बुनने वाली तथा व्यक्तित्व को लेकर उपन्यास जगत में एक सम्मोहन का सृजन करने वाली शिवानी ने महिला उपन्यासकारों के बीच जो स्थान अर्जित किया है वह श्लाघ्य है।

साधारणत: समाज शब्द का प्रयोग व्यक्तियों के समूहों के लिए किया जाता है तथा किसी भी संगठित या असंगठित समूह को समाज कह दिया जाता है। गिडिंक्स के अनुसार 'समाज स्वयं एक बंध है, एक संगठन है औपचारिक संघों का योग है जिसमें परस्पर सम्बन्ध वाले एक साथ संगठित होते है, मोरिस गिन्सवर्ग के अनुसार - ''एक समाज व्यक्तियों का वह समूह है जो कुछ सम्बन्धों और व्यवहार के कुछ ढंगों द्वारा संगठित है जो उन्हें उन अन्यों से पृथक करते हैं जो इन सम्बन्धों में सम्मिलित नहीं है या जो व्यवहार में उनसे भिन्न है। ''मैकाइबर एवं पेज ने लिखा है- ''समाज रीतियों एवं कार्य प्रणालियों की, अधिकार एवं पारस्परिक सहायता की, अनेक समूहों एवं विभागों की, मानव व्यवहार के नियंत्रण तथा स्वतंत्रताओं की एक व्यवस्था है। इस सदैव परिवर्तशील जटिल व्यवस्था को हम समाज कहते हैं। यह सामाजिक सम्बन्धों का जाल है और वह सदैव परिवर्तित होता है।

समाज और सामाजिक चेतना से आशय है कि मनुष्य समाज में सभी कार्य अपनी चेतन अवस्था में करता है। समाज और चेतना का सम्बन्ध वैसा ही है जैसा जीवन और शरीर का।

भारतीय संस्कृति व्यष्टि और समष्टि के सम्बन्ध में ही जीवन की सार्थकता अभिव्यक्त करती है। यहां ''यर्थापिण्डे तथा ब्रहमाण्डे'' का दर्शन प्रचलित है अर्थात् एक व्यक्ति के भीतर वे समस्त तत्व विद्यमान हैं जो समग्र सृष्टि में है। व्यक्ति सत्ता समष्टि सत्ता का लघु संस्करण होती है। अत: वहां सामाजिक संरचना को व्यक्ति के माध्यन में समझने का प्रयत्न प्राचीन भारतीय साहित्य में प्राप्त होता है। सामान्य तौर पर संरचना को व्यक्ति के माध्यम से समझने का प्रयत्न प्राचीन भारतीय साहित्य में प्राप्त होता है। सामान्य तौर पर सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक संगठन अथवा सामाजिक संरचना एवं उनके प्रकार्यों में घटित होने वाले रूपान्तरणों को इंगित करता हैं।

साहित्य को समाज के परिवर्तन और विकास को प्रभावित करने वाली शक्ति के रूप में आंका गया है। साहित्य निश्चय ही सामाजिक चेतना के निर्माण और विकास में सहायक हैं। सृजन की

©SHARAD

अनवरत प्रक्रिया के समाजसम्मत परिणामों से हम अपरिचित नहीं है। उन कृतियों का महत्त्व स्वतः ही बढ़ जाता है जिसके अन्दर समाज को झकझोरने की शक्ति के साथ राष्ट्र तंत्र को भी सकारात्मक दिशा देने का सामर्थ्य होता है। साहित्यकार की रचना की जड़े समाज में बहुत गहरी समाई होती है।

बदलते समाज के बदलते जीवन मूल्य के साथ शिवानी जी का सृजन संसार व्यक्ति, परिवार, समाज और जाति धर्म, कला, संस्कृति अर्थ, राजनीति आदि अनेक बिन्दुओं पर दृष्टि डालता रहा है। समाज दर्शन का बहु-आयामी रूप इनमें दृष्टिगत होता है। शिवानी जी ने समाज के सरोकारों से जुड़कर ही अपने साहित्य को समाज सापेक्ष बनाया है। इनकी औपचारिक रचनाएं व्यक्ति विशेष को प्रधानता देते हुए स्वयं उदात्तता की सीमा को स्पर्श करने लगती है। इनके उपन्यासों में कहीं ऐसी नारी की कहानी है जो अपने मुग्धकारी सौन्दर्य के कटु अनुभव उठाती हुई अपनी जीवनचर्या पूरी करती है तो कहीं ऐसी स्त्री का चित्रण है जो अकेली ही समाज से टक्कर लेती हुई अपने व्यक्तित्व को प्रेरणामय बनाती है। कहीं प्रेम व विवाह का द्वन्द्व है तो कहीं राजनीति व रोमांस के रेशमी धागों से बुनी गाथा।

शिवानी का 'सुरंगमा' एक ऐसी ही नारी की कहानी कहता है जो मुग्धकारी सौन्दर्य के कटु अनुभव सहती समाज में जीती हैं, सुरंगमा का सौन्दर्य यहाँ इसी बात की पुष्टि करता है कि यहाँ पर व्यक्ति सिर्फ सौन्दर्य का पुजारी है- ''मैं बड़ी देर से आपके पीछे आ रहा था। लाखों में एक चेहरा है आपका एकदम स्क्रीन टेस्ट के लिए ही बनाकर पृथ्वी पर भेजा है शायद विधाता ने। कहां-कहां नहीं घूमा पर चेहरा मिलता भी भावनाहीन और जहां भावपूर्ण चेहरा जुड़ता वहां एक न एक दोष या तो आंखे छोटी या बिल्कुल तीखी या नाक बहुत लम्बी पर वाह तबीयत खुश कर दी आपने! जैसा ही चेहरा वैसा ही फीगर मिस क्या शुभ नाम है आपका? पता? फोन नम्बर? (शिवानी- सुरंगमा - पृ0 12)

जहाँ एक तरफ सुरंगमा में लेखिका ने व्यक्ति को रूप सौन्दर्य का पुजारी माना वहीं दूसरी तरफ 'कैजा' में उनका व्यक्ति समाज से भागने की कोशिश करता है। लेकिन वह जा भी तो कहाँ सकता है। 'कैजा' की नायिका नन्दी एक बच्चे को मां का नाम देकर स्वयं समर्पित हो जाती है सिर्फ एक बच्चे की जिदद् पर उसे वापस लौटना पड़ता है। जिस जन्म भूमि की धरा पर मृत्यु पर्यन्त कभी पैर न धरने का निश्चय कर वह एक दुधमुहें को लेकर निकलती थी। आज विषम परिस्थितियां उसे फिर वहीं खींच लायी थी।[2] 'कैंजा' की नारी व्यक्ति पात्र नन्दी जहां आदर्श की ओर झुकती दिखाई गई है वहीं सुरेश भट्ट पुरुष व्यक्ति पात्र स्वार्थी लम्पट, कर्महीन, दुश्चरित्र , कामुक व व्यसनी दिखाया गया है जो समाज के नग्न यथार्थ को उद्घाटित करता है। केवल रूप के बल पर वह समाज में नारी को एक उपभोग की वस्तु मानकर उसका उपभोग करना चाहता हैं। यही मात्र उसका उद्देश्य है। नंदी एक ऐसे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व कर रही है जो आधुनिक शिक्षिता होने पर भी नारी सुलभ भावनाओं जैसे दया, माया, ममता से परिपूर्ण है एवं अपने जीवन का बलिदान करती है। सिर्फ एक बच्चे के कारण, वही बच्चा जब बड़ा होकर पिता का नाम पूछता है तो नन्दी को लौटना पड़ता है वापस- ''पुत्र

की इस घोषणा के पश्चात नन्दी के लिए वह पहाड़ यात्रा अनिवार्य हो उठी थी। भावुकता के क्षणिक आवेश में आकर वह आंखे बन्द कर जिस अंधे कुएं मे कूद गई थी वहां से लौटने का अब कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता।''[3] कैजा का व्यक्ति पात्र (कैंजा यानि नन्दी) व्यक्तिगत स्वार्थो के ऊपर उठकर परमार्थ की बेदी पर अपने सुखों का बलिदान देती है। दृष्टि से यद्यपि आधुनिक युग में व्यक्ति का यह स्वभाव अस्वाभाविक सा जान पड़ता है। अपवाद स्वरूप ही किसी लड़की का इतना त्याग समाज में देखा जाता है इस तरह हम इसे आदर्श की ओर झुका हुबा उपन्यास ही कहेंगे।

नारी जीवन की गहन पीड़ा एवं उसकी अवश स्थिति शिवानी के उपन्यासों का आंवश्यक अंग है। विवाह परिवार बसाने का आधार रहा है दो या दो से अधिक स्त्री-पुरुष के साथ-साथ रहकर जीवन यापन एवं दायित्व निर्वाह की आकांक्षा, आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सम्बन्ध स्थापित करना और उन्हें स्थिरता प्रदान करने की संस्थापक व्यवस्था ही विवाह है जो मानव जीवन के लिए अनिवार्य रूप से स्वीकृत है, यद्यपि विवाह- विच्छेद को वैधानिक आधार मिलने से पूर्व भी पति - पत्नी पार्थक्यपूर्ण जीवन व्यतीत करते है, किन्तु बहुत कम।

''चौहद फेरे'' के कर्नल की पत्नी नन्दी अपने पति की उपेक्षा पाकर घर छोड़कर चली जाती है। 'सुरंगमा' पर भी पारिवारिक प्रभाव की दृष्टि से रूप से छाप है इसी कारण अपनी जिन्दगी का सबसे अहं फैसला वह खुद करती है, और अपनी सहेली मीरा से कहती है '' बुरा मान गई मीरा? पर मैं मन ही मन निश्चय कर चुकी हूँ कि कभी विवाह करने की मूखर्ता नहीं करूंगी, तुझे तो पता है कि मेरा मां की असामयिक मृत्यु का कारण ही उनका विवाह था। दूध की जली मां ने भले ही मठ्ठा फूंक-फूक कर न पिया हो पर मैं तो पी ही सकती हूँ[4]।

शिवानी का ''चौदह फेरे'' नामक उपन्यास अपने परिवेश और परम्परा के कारण बहुत अधिक चर्चा का विषय रहा। कुमाऊँनी परिवेश में वहां के संस्कार, रीति-रिवाज आदि का सजीव चित्रण लेखिका ने इस उपन्यास में किया है। पारिवारिक परम्पराएं कितनी दृढ़ होती हैं कि अफसर बेटा भी उसका उल्लंघन नहीं कर सकता, वह इन्ही के अंदर जीता है। लेखिका के शब्दों में - '' विवाह कर कर्नल अकेले ही कलकत्ता लौट आया बहू को साथ ले जाने की धृष्टता तक कुमाऊँ का तरुण नहीं कर सकता था। पुत्र बहू को सास और ससुर की सेवा के लिए ब्याह कर लाता था, प्रणय निवेदन की सार्थकता के लिए नहीं[5]।''

मूल रूप से पर्वतीय प्रदेश की होने के कारण आंचलिकता उनके उपन्यासों में परिलक्षित होती हुई अपना व्यापक प्रभाव छोड़ती है। पहाड़ के संस्कृति और सामाजिक परिवेश में जातीयता की जड़ बहुत गहरी और दूर-दूर तक फैली है। मनुवादी वर्ण व्यवस्था, ब्राह्मण, क्षत्रिय-वैश्य, शूद्र का यदि उचित सन्नियोजन देखना हो तो पहाड़ी समाज में देखा जा सकता है। यहाँ का ब्राह्मण वर्ग अन्य वर्गों

की अपेक्षा समाज में आदर और गौरव की पात्रता का लाभ प्राप्त करता आया है। जातिगत परम्पराओं से विद्रोह करने वाले को आज भी पहाड़ी समाज में हेय तथा घृणा की दृष्टि से देखा जाता हैं यद्यपि समय के साथ-साथ जातिगत मान्यतायें तोड़ने का साहस भी व्यक्ति के अन्दर पैदा हुआ है। धीरे-धीरे विकसित समाज और वैज्ञानिक सम्यता के विकास के कारण ही पहाड़ी समाज में जातीय संदर्भो में इतना बदलाव आया है कि जहाँ पहले युवाओं को शिक्षा दिलाने के उद्देश्य से पहाड़ से बाहर भेजे जाने पर ब्राह्मण रसोईया भी साथ भेजा जाता था और घर आने पर गौमूत्र से उनका शुद्धीकरण किया जाता था, पौत्र के अंग्रेजी स्कूल से लौटने पर उस पर विधिवत गौमूत्र का छिड़काव कर उसे पितामह की चरणधूलि मिलती, शिवदत्त को इण्टर कराने के पश्चात इलाहाबाद भेज़ दिया गया साथ में एक ब्राह्मण रसोईया भी गया।[6]

समाज का जहाँ तक प्रश्न है, तो शिवानी के उपन्यासों में सामाजिक मर्यादाओं का अतिक्रमण न्यून रूप से दिखाया है। प्रेम का आदर्श रूप प्रतिम्बित हैं। समाज में पुरुष वर्ग की स्वेच्छाचारिता का दिग्दर्शन होता है। नारी अधिकांशत: समाज के नियमों में बंधी बहुत विद्रोही कदम नहीं उठा पाती है।

व्यक्ति का समाज से अटूट सम्बन्ध होता है, समाज से कटकर व्यक्ति नहीं रह पाता चाहे इसके लिए प्रिय वस्तु भी त्यागनी पड़े, क्योंकि समाज से निर्पेक्ष वह जी नहीं सकता है। शोभा, सतीश, सविता, अविनास, और मंजरी के माध्यम से लेकिका ने अपने 'मायापुरी' नामक उपन्यास का ताना-बाना बुना है। शोभा का हृदय सतीश को समर्पित है किन्तु सतीश, के पैरों में अहसान की बेड़ियां लगी है। प्रेम वैयक्तिक धारणा है, विवाह एक सामाजिक संस्था है, प्रेम जीवन की ऊर्जा है और विवाह एक कर्तव्यबोध है। प्रेम टूटने से मानव हृदय बिखर जाता है, व्यक्ति विपथगामी हो जाता है। लेकिन समाज निर्पेक्ष नहीं। प्रेम पंथ की विषमताओं को गुनता-बुनता सतीश एक दिन वायुयान से काबुल जा रहा होता है कि उसका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है और सतीश सदा के लिए संसार से विदा हो जाता है, संसार से भागना उसके लिए सहज कार्य लगा बजाय समाज के।

शिवानी का ''चौदह फेरे'' नामक उपन्यास विवाह जैसे पवित्र बन्धन को बहुत महत्त्व देता है। जब कोई पुरुष किसी स्त्री के साथ वैवाहिक प्रक्रिया में समाज के समक्ष सात फेरे लेता है तो वह कुछ नियमों व मर्यादाओं में बंध जाता है लेकिन जब वह दो स्त्रियों के साथ ''चोदह फेरे'' लेने का कदर्थित कार्य करता है तो उसकी गति शिवदत्त की सी जाती है। वह दो नावों पर सवार नाविक की भांति मझधार में डूबने के लिए शापित हो जाता है। लेखिका शिवानी नारी का रूप समाज में ऊँचा देखना चाहती है। फिर चाहे मर्यादा हो या पद प्रतिष्ठा। बेटी सुरंगमा के लिए मां लक्ष्मी के शब्द समाज पर करारा व्यंग करते हैं- 'तब क्या करोगी, दिन रात शराबी बाप को पलंग पर लिटाती रहेगी क्या? या मेरी तरह मास्टनी बन जीवन भर खूंखार सिरफिरी इस्पेक्टनियों की धौंस सहती रहेगी'?[7]

कैंजा की नायिका नन्दी समाज के जिस भय से गांव छोड़कर चली गई थी उसी समाज ने जब बच्चे रोहित को पिता के नाम का अहसास करवाया तो बच्चा मां से पूछता है और मां को लौटना पड़ता है फिर उसी गांव में जहां न लौटने की कसम खाकर गई थी। तब सुरेश भट्ट मरणासन्न स्थिति में है रोहित को दिखाते हुए नन्दी कहती है- ''रोहित तुम रोज पूछते थे न, तुम्हारे डैडी कहां है? ये रहे तुम्हारे डैडी[8]।''

बेमेल विवाह भी समाज की सबसे बड़ी समस्या है। 'रति विलाप' शिवानी का अनमेल विवाह व वृद्धावस्था में किये गये प्रेम का दुष्परिणाम दिखाया गया है। समाज की अनेक विद्रूपताओं के वर्णन से लेखिका ने अपने गहन सूझ-बूझ एवं जागरूक सामाजिक चेतना का परिचय दिया है। पागल लड़के के साथ अनूसूया का विवाह उसके जीवन को अभिशप्त बना देता है और वृद्ध ससुर द्वारा तरूणी हीरा से प्रेम उसकी मृत्यु का कारण बनाता है, स्थितियां दोनों भिन्न है किन्तु कारण एक ही है और यह है समाज में बेमेल विवाह या यौन सम्बन्ध।

विशेष रूप से लेखिका का नारी समाज को दिया संदेश है कि विकट एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में धैर्य और साहस रखकर जीवन को जीने योग्य बनाया जा सकता है। लेखिका अपने इस उद्देश्य में सर्वथा सफल रही है। हमारा समाज अति प्राचीनकाल से पुरुष प्रधान रहा है। नारियों को देवियों की कोटि में रखकर उनकी स्तुति की गई है, किन्तु व्यवहार में उसकी सदायशता को उसके निष्छल व्यवहार का तथा निष्कपट प्रेम का नाजायज फायदा स्वयं को समाज का शासक मानने वाले पुरूषों ने उठाया है। किन्तु स्वातंत्र्योत्तर काल की नारी अपनी स्थिति एवं सुखकर जीवन यात्रा के लिए संघर्ष हेतु सन्नद्ध है। 'सुरंगमा' की राज्यलक्ष्मी हो या ''चौदह फेरे' की अहिल्या अथवा 'कैंजा' की नन्दी हो या 'तीसरा बेटा', की सावित्री हो। लेखिका ने अपने उपन्यासों द्वारा यह सन्देश प्रेषित करने का श्लाघ्य प्रयत्न किया है कि सोच समझकर लिए गये निर्णय से हटने का विचार नहीं लाना चाहिए उस पर दृढ़ता से कायम रहना ही जीवन को भास्वर बनाता है।

सन्दर्भ :-

1- समाजशास्त्र, एम.एन. गुप्ता एवं डी.डी. शर्मा, पृ. 7
2- कैंजा, शिवानी, पृ. 8
3- वही पृ.12
4- सुरंगमा, शिवानी, पृ. 159
5- चौदह फेरे, शिवानी, पृ. 9
6- वही पृ. 6
7- सुंरगमा, शिवानी, पृ. 116
8- कैंजा, शिवानी, पृ. 40